स करो। प्रह उठी गोयम समरीजे काज समग्गह ततखण सीझे नवनि-
धि विलसे तास घरे॥५८॥ चउदहसय बारोत्तर वरसे गोयम गणहर के-
वलदिवसे किओ कवित उपगार परो। आदेहि मंगल एह भणीजे पर-
व महोच्छव पहिलो कीजे ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो॥५९॥ धन्य माता
जिणे उदरे धरिया धन्य पिता जिणे कुल अवतरिया धन्य सद्गुरु जि-
णे दिक्खियाए। विनयवंत विद्याभंडार जस गुण कोई न लब्भे पार वि-
द्यावंत गुरु वीनवेए॥६०॥ गौतमस्वामि तणो ए रास भणतां सुणतां ॥
लीलविलास सासयसुखनिधि संपजेए। गौतमस्वामिनो रास भणी-
जे चउविहसंघ रलियायत कीजे ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो॥६१॥ इति

॥प्रतिवर्षारंभदिनेऽधुना मुनीन्द्रैः समक्षमार्याणाम्। संघस्यानां मंग-
लहेतुतया पठ्यते सर्वैः॥१॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम्॥२॥ इतिश्री गौतमस्वामीरास॥
॥अथ प्रशस्तिः॥ पूज्यपाद् आचार्यदेव श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वर-पट्टा-
लंकार पूज्यपाद-आचार्यदेव श्रीमद् विजयरामचन्द्रसूरीश्वर-शिष्यर-
त्न पन्न्यासप्रवर श्रीमद् कनकविजयगणिवरान्तेवासि-मुनिवर श्रीमहि-
माविजयोपदेशेन कच्छ-गोधरानिवासी-मुंबापुरीवास्तव्य श्रेष्ठिवर्य
श्री शिवजी वेलजी धर्मपत्न्या श्री झवेरबेन इत्यनया स्वश्रेयोऽर्थं लिखा-
पिता इयं प्रतिरियं नन्दतादाचन्द्रार्कम्॥ वीर सं० २४८८. वि० सं० २०१८
अक्षयतृतीया॥ लिपिकार. भोजक चीमनलाल पुनमचंद. राजनगरे॥

नरवइ घर जिम मयगल गाजे तिम जिनशासन मुनिपवरो॥५४॥जिम सुरतरुवर सोहे शाखा जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा जिम वनकेत की महु-महेए। जिम भूमीपति भुयबल चमके जिम जिनमंदिर घंटा रणके तिम। गोयम लब्धे गहगहेए॥५५॥ चिंतामणि कर चढिओ आज सुरतरु सारे वंछित काज काम कुंभ सौ वश हुओए। कामगवी पूरे मनकामिय अष्ट म-हा सिद्धि आवे धामिय सामिय गोयम अणुसरोए॥५६॥ पणवक्खर पहे-लो पभणीजे माया बीजइ सो निसुणीजे श्रीमति शोभा संभवेए। देवह धुरि अरिहंत नमीजे विनय पहुत्त उवझाय थुणीजे इण मंत्रे गोयम नमोए॥५७॥ परि परि वसतां कांइ करीजे देश देशांतर कांइ भमीजे कवण काज आया-

स तिहुयण नमंसिय-रायगिहि नयरीहिं ठविअ बाणुं वय वरिसाउ।
सामी गोयम गुण निलो होशे शिवपुर गउ॥५१॥ ढाल छट्ठी-भाषा.)
जिम सहकारे कोयल टहुके जिम कुसुमह वन परिमल महके जिम
चंदन सोगंधनिधि। जिम गंगाजळ लहेरे लहके जिम कणयाचल
तेजे झलके तिम गोयम सोभाग्यनिधि॥५२॥ जिम मानससर निवसे
हंसा जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा जिम महुयर राजीववने॥जि-
म रयणायर रयणे विलसे जिम अंबर तारागण विकसे तिम गोयम
गुण केलि वने॥५३॥ पुनमनिशि जिम शशहर सोहे सुरतरु महिमा
जिम जग मोहे पूरव दिसि जिम सहसकरो। पंचानन जिम गिरिवर राजे

भलुं ए कीधलुं सामि जाण्युं केवल मागशे ए चिंतवियुं ए बाळक जेम
अहवा केडे लागशे ए ॥४८॥ हुं किम ए वीरजिणंद भगते भोळो भोळ-
व्यो ए आपणो ए उचिओ नेह नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए एक वी-
तराग नेह न जेणे लालिओ ए इण समे गोयम चित्त राग वैरागे वाळि-
ओ ए ॥४९॥ आवतुं ए जो ऊलट्ट रहेतुं रागे साहिउं ए केवल ए नाण उ-
प्पन्न गोयम सहेजे उमाहिओ ए। तिहुअण ए जयजयकार केवल महि-
मा सुर करे ए गणहर ए करय वखाण भवियण भव जिम निस्तरे ए ॥
५०॥ (वस्तुछंद-) पढम गणहर पढम गणहर वरिस पंचास गिहिवासे
संवसिय तीस वरिस संजम विभूसिय सिरि केवलनाण पुण बार वरि

इम भणइ गोयम म करिस खेउ। छेडे जइ आपण सही होसुं तुल्ला
बेउ॥४५॥(ढाल ५मी-भाषा.) सामिओए वीर जिणंद पुनिम चंद जिम
उल्लसिअ विहरिओए भरह वासम्मि वरिस बहोंतेर संवसिअ। उवतो
ए कणय पउमेसु पाय कमळ संघहिं सहिअ आविओए नयणा नंद
नयर पावापुरी सुर महिय॥४६॥ पेखिओए गोयम सामी देव शर्मा
प्रतिबोध करे आपणो ए त्रिशला देवी नंदन पहोतो परम पए। वळतां
ए देव आकाश पेखवि जाणिय जिण समेए तो मुनि मनि विखवाद ना-
द भेद जिम ऊपनोए॥४७॥ कुण समोए सामिय देखि आप कन्हे दुं टा-
लिओए जाणतोए तिहुअण नाह लोक विवहारु न पालिओए। अति-

तमलबधि वसेण चरम सरीरी सोय मुनि ॥३३॥ इअ देसण निसुणेवि
गोयम गणहर संचलिअ। तापस पनरसएण तो मुनि दीठे आवतो ए ॥
३४॥ तव सोसिय नियअंग अम्ह शगती नवि उपजेए। किम चढशे दृढ-
काय गज जिम दिसे गाजतो ए ?॥३५॥ गिरुओ एणें अभिमान तापस
जा मन चिंतवेए। तो मुनि चढीयो वेग आलंबवि दिनकरकिरण॥३६॥
कंचण मणि निप्फन्न दंडकलस धजवड सहिय। पेखवि परमाणंद जि-
णहर भरहेसर महिय॥३७॥ नियनिय कायप्रमाण चउदिसि संठिअ
जिणह बिंब। पणमवि मन उल्लास गोयम गणहर तिहां वसिय॥३८॥ व-
यरस्वामीनो जीव तिर्यग्‌जृंभक देव तिहां। प्रतिबोधे पुंडरीक कंडरीक-

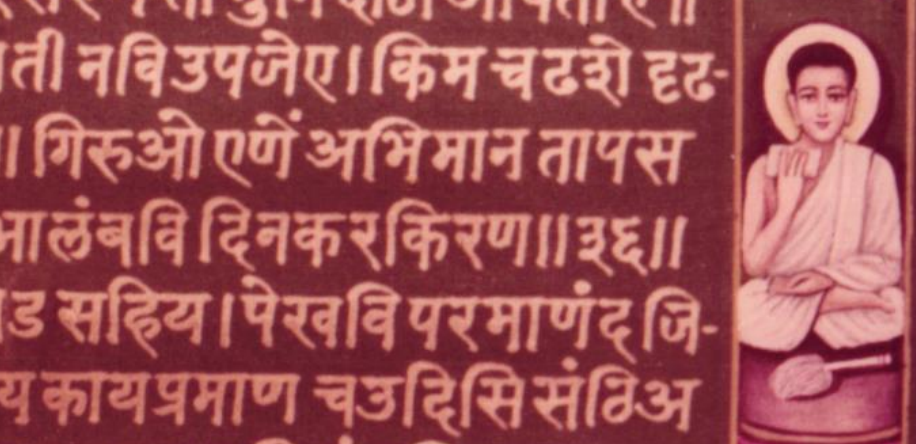

अध्ययन भणी ॥ ३९ ॥ वळता गोयम सामि सवि तापस प्रतिबोध करे । ले-
ई आपण साथ चाले जिम जूथाधिपति ॥ ४० ॥ खीर खांड घृत आण अमि-
यवूठ अंगुठ ठवि । गोयम एकण पात्र करावइ पारणुं सवे ॥ ४१ ॥ पंचसयां
शुभ भाव उज्ज्वल भरिओ खीर मीसे । साचा गुरु संजोग कवळ ते केवळ-
रूप हुओ ॥ ४२ ॥ पंचसयां जिणनाह समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि के-
वलनाण उप्पन्नुं उज्जोय करे ॥ ४३ ॥ जाणे जिणवि पियूष गाजंती घणमेघ
जिम । जिणवाणी निसुणेवि नाणी हुआ पंचसयां ॥ ४४ ॥ (वस्तुछंद-) इणे अ-
नुक्रमे इणे अनुक्रमे नाणसंपन्न पन्नरह सय परिवरिय हरियदुरिय जिणना-
ह वंदइ जाणवि जगगुरुवयण तिण्ह नाण अप्पाण निंदइ - चरम जिणेसर

बोलावे त्रिजगगुरु इंद्रभूई नामेण तो। श्रीमुख संज्ञा सामि सवे फेडे वेद-
पएण तो॥२२॥ मान मेल्ही मद ढेली करी भगते नामे सीस तो। पंच स-
यासुं व्रत लीयोए गोयम पहिलो सीस तो॥२३॥ बंधव संजम सुणवि क-
री अगनिभूई आवेइ तो। नाम लेइ आभास करे ते पण प्रतिबोधेइ तो
॥२४॥ इण अनुक्रमे गणहरयण थाप्या वीरे अग्यार तो। तव उपदेशे
भुवनगुरु संजम चुं व्रत बार तो॥२५॥ बिहुं उपवासे पारणुंए आपण पे
विहरंत तो। गोयम संजम जगसयल जयजयकार करंत तो॥२६॥ (व-
स्तुछंद.) इंदभूइअ इंदभूइअ चढिय बहुमान हुंकारो करी कंपतो सम-
वसरण पहोतो तुरंतो। इह संसा सामि सवे चरमनाह फेडे तुरंत-बोधि-

बीज संजाय मने गोयम भवह विरत्त। दिक्ख लेइ सिक्खा सहिय गण-
हर पय संपत्त॥२७॥ (ढाल ४थी-भाषा.) आज हुओ सुविहाण आज
पचेलिम पुण्य भरो। दीठा गोयम सामि जो नियनयणे अमिय भरो॥
२८॥ सिरि गोयम गणहार पंचसयां मुनि परिवरिय भूमिय करे विहा-
र भवियां जण पडिबोह करे॥२९॥ समवसरण मोझार जे जे संसा उप-
जेए। ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो॥३०॥ जिहां जिहां दीजे दि-
क्ख तिहां तिहां केवल उपजेए। आप कन्हे अणहुंत गोयम दीजे दान इ-
म॥३१॥ गुरु उपरे गुरु भत्ति सामी गोयम उपनीय। इण छल केवलनाण
रागज राखे रंग भरे॥३२॥ जो अष्टापद शैल वंदे चढी चउवीश जिण। आ-

सुखकारण-जिणवर जग उज्जोय करे तेजे करि दिनकार। सिंहासण सामी ठव्यो हुओ सु जयजयकार॥१६॥ (ढाल ३जी-भाषा.) तव चढिओ घण मान गजे इंद्र भूई भूदेव तो। हुंकारो करि संचरिअ कवण सुजिणवर देव तो?॥१७॥ जोजन भूमि समवसरण पेखे प्रथमारंभ तो। दह दिसि देखे विबुधवधू आवंती सुररंभ तो॥१८॥ मणिमय तोरण दंडधज कोसीसे नवघाट तो। वैरविवर्जित जंतुगण प्रातिहारज आठ तो॥१९॥ सुरनर किन्नर असुरवर इंद्र इंद्राणी राय तो। चित्त चमक्किय चिंतवेए सेवंता प्रभुपाय तो॥२०॥ ससहकिरण सम वीरजिण पेखवि रूप विशाळ तो। एह असंभव संभवेए साचोए इंद्रजाळ तो॥२१॥ तो

वसमरसभरभरी वरसंता जोजनवाणि वरवाण करंता। जाणेवि व-
द्धमाणजिणपाया सुरनर किन्नर आवे राया॥१२॥ कांतिसमूहे झल-
झलकंता गयण विमाणे रण रणकंता। पेखवि इंद भूई मन चिंते सु-
र आवे अम्ह जगन होवंते॥१३॥ तीरत रंडक जिम ते वहता समव-
सरण पुहता गहगहता। तो अभिमाने गोयम जंपे इणि अवसरे
कोपे तणु कंपे॥१४॥ मूढा लोक अजाणुं बोले सुर जाणंता इम कांई
डोले। मू आगळ को जाण भणीजे? मेरु अवर किम ओपम दीजे॥१५
॥(वस्तुछंद-) वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुरी सुर-
महिय पत्त नाह संसारतारण तहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु

णकरचरण जिणवि पंकज जळ पाडिय तेजे ताराचंदसुर आकाश-
भमाडिय। रूवे मयण अनंग करवी मेल्यो निरधाडीय धीरिम मेरु गं-
भीर सिंधु चंगिमचय चाडिय॥४॥ पेखवि निरुवमरूव जास जण जं-
पे किंचिय एकाकी कलिभीत इत्थ गुण मेल्या संचिय। अहवा निश्चे पु-
व्वजम्म जिणवर इणे अंचिय रंभापउमागौरी गंगरति विधिआ वंचिय
॥५॥ नहिबुध नहिगुरु कवि न कोइ जसु आगल रहिओ पंचसया यु-
णपात्रछात्र हिंडे परवरिओ। करे निरंतर यज्ञकर्म मिथ्यामति मोहिय
इण छळ होशे चरण नाण दंसणह विसोहिय॥६॥ (वस्तुछंद-) जंबूदी-
वह जंबूदीवह भरहवासंमि खोणीतल मंडण मगधदेस सेणियनरेस

।वर गुब्बर गाम तिहां विप्प वसे वसु भुइ सुंदर-तसु भज्जा पुहवी सय-
ल गुण गण रूव निहाण। ताण पुत्त विज्जा नीलो गोयम अति हि सुजाण॥
७॥(ढाल २जी-भाषा.) चरम जिणेसर केवल नाणी चउविह संघ पइ-
ट्ठा जाणी। पावापुर सामी संपत्तो चउविह देव निकाय हि जुत्तो॥८॥देवे
समवसरण तिहां कीजे जिण दीठे मिथ्यामति खीजे। त्रिभुवन गुरु सिं-
हासन बइठा ततखिण मोह दुगंते पइठा॥९॥क्रोध मान माया मद पू-
रा जाये नाठा जिम दिन चौरा। देव दुंदुहि आकाशे वाजे धर्म नरेसर आ-
व्या गाजे॥१०॥कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा चोसठ इंद्र जसु मागे से-
वा। चामर छत्र शिरोवरि सोहे रूप हि जिण वर जग सहु मोहे॥११॥उ-

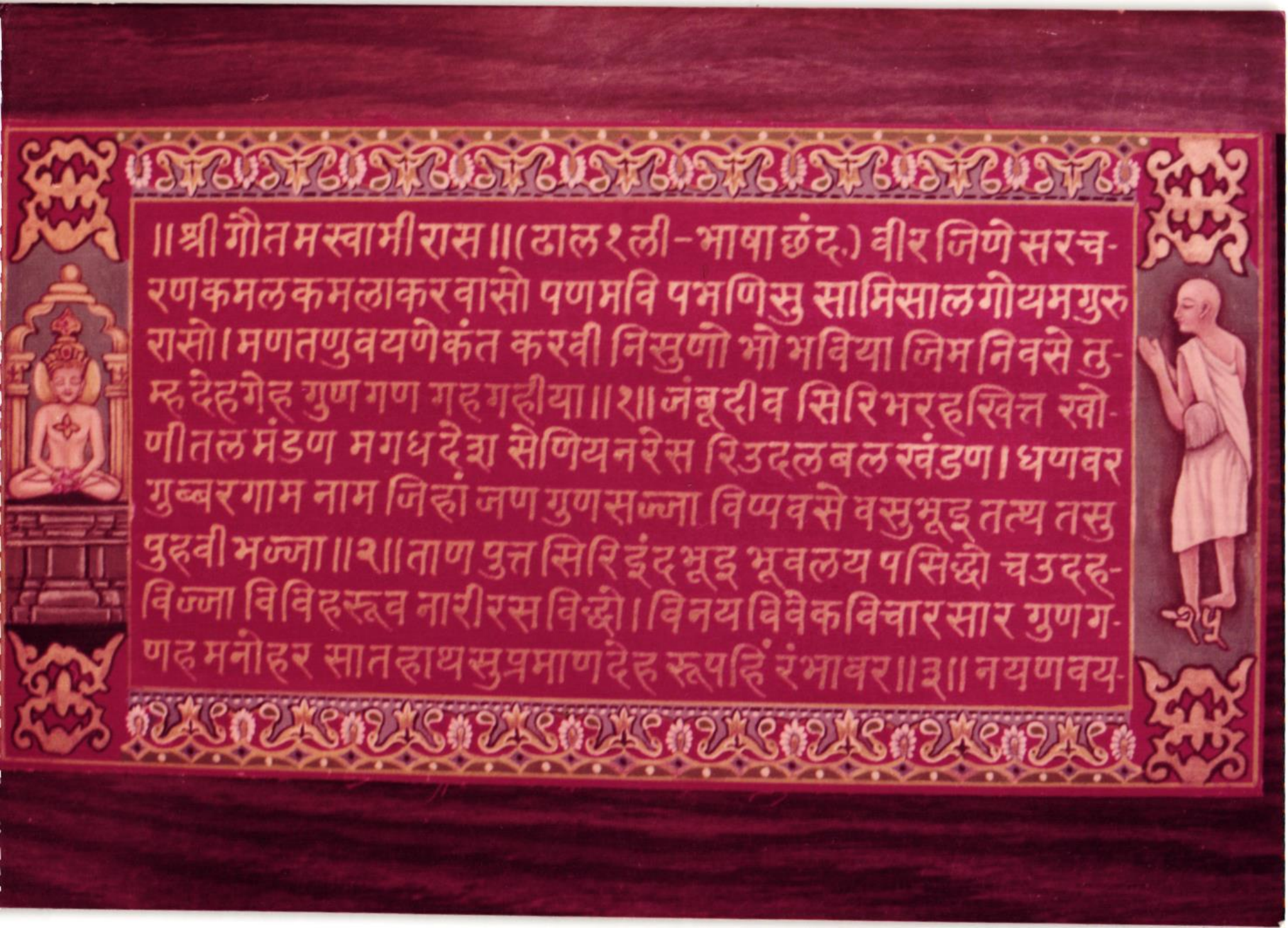

॥श्री गौतमस्वामीरास॥(ढाल १ ली-भाषा छंद.) वीर जिणेसर च-
रण कमल कमलाकर वासो पणमवि पभणिसु सामिसाल गोयमगुरु
रासो। मणतणुवयणेकंत करवी निसुणो भो भविया जिम निवसे तु-
म्ह देहगेह गुण गण गहगहीया॥१॥ जंबूदीव सिरिभरहखित्त खो-
णीतल मंडण मगधदेश सेणियनरेस रिउदल बल खंडण। धणवर
गुब्बर गाम नाम जिहां जण गुणसज्जा विप्पवसे वसुभूइ तत्थ तसु
पुहवी भज्जा॥२॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ भूवलय पसिद्धो चउदह-
विज्जा विविहरूव नारीरस विद्धो। विनय विवेक विचारसार गुणग-
णह मनोहर सातहाथ सुप्रमाण देह रूपहिं रंभावर॥३॥ नयणवय-

सङ्घ जगज्जनपद राजाधिपराजसन्निवेशानाम्। गोष्ठिकपुरमुख्या-
णां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम्॥४॥ श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु श्री-
पौरजनस्य शान्तिर्भवतु श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु श्रीराजाधिपानां शा-
न्तिर्भवतु श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भ-
वतु श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु ॐ
स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा। एषा शान्तिः प्रतिष्ठा यात्रा-
स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम चन्दनकर्पूराऽगरुधूपवा-
सकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः
पुष्पवस्त्रचंदनाऽऽभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयि-

त्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति। नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान् कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः॥३॥ अहं तित्थयरमाया सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी। अम्हसिवं तुम्हसिवं असिवोवसमं सिवं भवतु॥ॐ॥स्वाहा॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे॥४॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम्॥५॥ ॥इति श्री नवस्मरणानि समाप्तानि॥ श्री संघस्य शांतिर्भवतु॥

भवन्तु स्वाहा। ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन सम्बन्धि बन्धुवर्ग-
सहिता नित्यं चाऽऽमोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमण्डलायतन निवा-
सि साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्ष दौर्मन-
स्योपशमनाय शान्तिर्भवतु। ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्ग·ल्योत्सवाः सदा
प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा
। श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्ति विधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश मु-
कुटाभ्यर्चिताङ्घ्र·ये॥१॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान् शान्तिं दिशतु मे गुरुः
। शान्ति रेव सदा तेषां येषां शान्तिर्गृहे गृहे॥२॥ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुः-
स्वप्न दुर्निमित्तादि। सम्पादित हित सम्पन्नाम ग्रहणं जयति शान्तेः॥३॥श्री-

द्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाधन प्रवेशन निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जय-
न्तु ते जिनेन्द्राः। ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला वज्राङ्कुशी अप्रतिचक्रा
पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी
वैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नि-
त्यं स्वाहा। ॐ आचार्योपाध्याय प्रभृति चातुर्वर्ण्यस्य श्री श्रमण सङ्घस्य
शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु। ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारक बुध बृह-
स्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कु-
बेर वासवाऽऽदित्य स्कन्द विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्र दे-
वतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोष कोष्ठागारा नरपतयश्च

चनं प्रस्तुतं सर्वमेतद् ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावादारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः॥१॥ भो भो भव्यलोकाः इह हि भरतैरावतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादिरद्रौ विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घो-

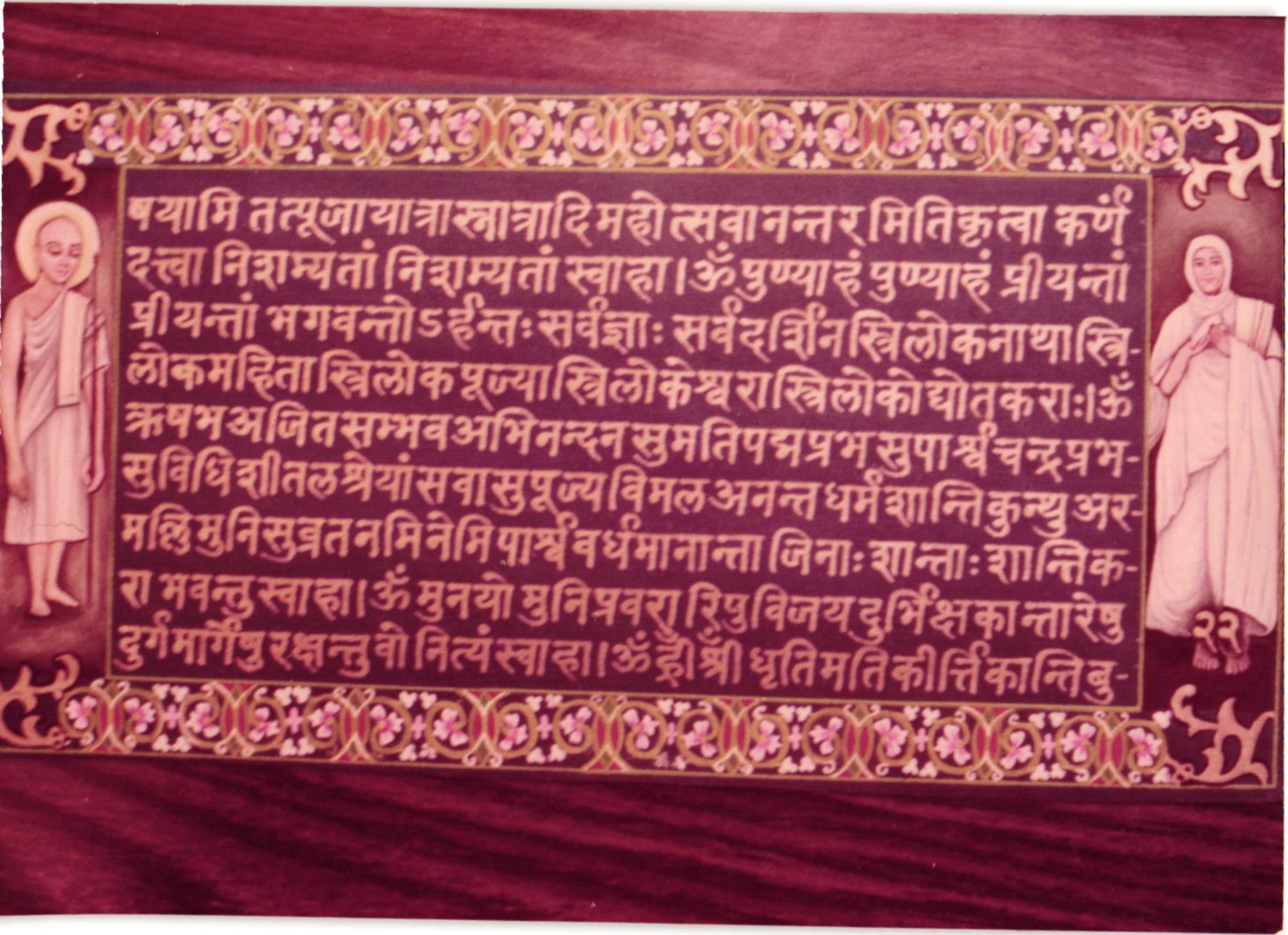

षयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तर मिति कृत्वा कर्णं
दत्त्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा। ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां
प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रि-
लोकमहिता स्त्रिलोकपूज्या स्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योतकराः। ॐ
ऋषभअजितसम्भवअभिनन्दन सुमतिपद्मप्रभ सुपार्श्वचन्द्रप्रभ-
सुविधिशीतलश्रेयांसवासुपूज्य विमल अनन्त धर्मशान्ति कुन्थु अर-
मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्ववर्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिक-
रा भवन्तु स्वाहा। ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्भिक्षकान्तारेषु
दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं धृतिमतिकीर्त्तिकान्तिबु-

संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ। त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पु-
नीहि सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः॥४१॥ यद्यस्ति नाथ भव-
दङ्घ्रिसरोरुहाणां भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः। तन्मे त्व-
देकशरणस्य शरण्य भूयाः स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि॥
४२॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चु-
किताङ्गभागाः। त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा ये संस्तवं तव वि-
भो रचयन्ति भव्याः॥४३॥ जननयनकुमुदचन्द्र प्रभास्वराः स्वर्गस-
म्पदो भुक्त्वा। ते विगलितमलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते॥४४॥
युग्मम्॥ ॥(९) नवमं बृहच्छान्तिस्मरणम्॥ भो भो भव्याः शृणुत व-

मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः प्रोद्यत्प्रबन्ध गतयः कथम-
न्यथैते ?॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि नूनं
न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या। जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुः-
खपात्रं यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः॥३८॥ त्वं नाथ
दुःखिजनवत्सल हे शरण्य कारुण पुण्यवसते वशिनां वरेण्य। भ-
क्त्या नते मयि महेश दयां विधाय दुःखाङ्कुरोद्दलन तत्परतां विधे-
हि॥३९॥ निःसङ्ख्यसार शरणं शरण्यं शरण्यमासाद्य सादितरिपुप्र-
थितावदातम्। त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधान वन्ध्यो वध्योऽस्मि चेद्
भुवन पावन हा हतोऽस्मि॥४०॥ देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिल वस्तुसार

त्वं नाथ जन्मजल धेर्विपराङ्मुखोऽपि यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठिल-
ग्नान्। युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव चित्रं विभो यदसि कर्मविपाक-
शून्यः॥२९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं किंवाऽक्षर प्रकृतिर-
प्यलिपिस्त्वमीश। अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव ज्ञानं त्वयि स्फुरति वि-
श्वविकाशहेतु ॥३०॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषादुत्थापिता-
निकमठेन शठेन यानि। छायाऽपि तैस्तव न नाथ हता हताशो ग्रस्तस्त्व-
मीभिरयमेव परं दुरात्मा॥३१॥ यद्गर्जदूर्जित घनौघमदभ्रभीमं भ्रश्य-
त्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम्। दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे तेनैव
तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम्॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति मर्त्यमु-

ण्डप्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः। प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितोयः
सोऽस्याभवत् प्रतिभवं भवदुःखहेतुः॥३३॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप
ये त्रिसन्ध्यमाराधयन्ति विधिवद् विधुतान्यकृत्याः। भक्त्योल्लसत्पुल-
कपक्ष्मलदेहदेशाः पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः॥३४॥ अस्मिन्न-
पारभववारिनिधौ मुनीश मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि। आकर्णि-
ते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति?॥३५॥ ज-
न्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम्। ते-
नेह जन्मनि मुनीश परा भवानां जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्॥
नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।

राग नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि?॥२४॥ भो भोः प्रमादमव धूय
भजध्वमेनमागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव जग-
त्त्रयाय मन्ये नदन्नभि नभः सुरदुन्दुभिस्ते॥२५॥ उद्द्योतितेषु भवता भु-
वनेषु नाथ तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः। मुक्ता कलापकलितो-
च्छ्वसितातपत्रव्याजात् त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥२६॥ स्वेन प्रपूरि-
तजगत्त्रय पिण्डितेन कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन। माणिक्यहेम
रजतप्रविनिर्मितेन सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥२७॥ दिव्य स्त्र-
जो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदिवा परत्र त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव॥२८॥

वा मुनीश गच्छन्ति नूनमध एवहि बन्धनानि॥२०॥ स्थाने गभीरहृद-
योदधि सम्भवाया: पीयूषतां तव गिर: समुदीरयन्ति। पीत्वा यत: प-
रमसम्मदसङ्गभाजो भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम्॥२१॥
स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो मन्ये वदन्ति शुचय: सुरचाम-
रौघा:। येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय ते नूनमूर्ध्वगतय: खलु
शुद्धभावा:॥२२॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वल हेमरत्नसिंहासनस्थमि-
हभव्यशिखण्डिनस्त्वाम् आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै श्चामीक-
राद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम्॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव। सान्निध्यतोऽपि यदिवा तव वीत-

मिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्नास्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः। जन्मो-
दधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन ? चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥१२॥ क्रोध-
स्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः? ॥
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमा-
नी?॥१३॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूपमन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोश-
देशे। पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्यदक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः
?॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन देहं विहाय परमात्मदशां व्र-
जन्ति। तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके चामीकरत्वमचिरादिव धातुभे-
दाः॥१५॥ अन्तः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं भव्यैः कथं तदपि नाशयसे

शरीरम्?। एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि यद्धिग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥२६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्स्वभावः। पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं किं नाम नो विषविकारमपाकरोति?॥२७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः। किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण?॥२८॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः। अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि॥ किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः?॥२९॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः?। त्वद्गोचरे सुमनसां यदि

न्यजनानू निदाघे प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि॥७॥ हृद्वर्त्ति-
नि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति जन्तोः क्षणेन निबिडाअपि कर्मबन्धाः।स-
द्यो भुजङ्गममया इव मध्यभागमभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य॥८॥मु-
च्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्ररौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।गोस्वा-
मिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः॥९॥ त्वंतार-
को जिन कथं भविनां? त एव त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।यद्वा दृतिस्त-
रति यज्जलमेष नूनमन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥१०॥यस्मिन् हर-
प्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।विध्या-
पिता हुतभुजः पयसाऽथ येन पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन?॥११॥स्वा-

रूपमस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः?। धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि-
वा दिवान्धो रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?॥३॥ मोहक्षयादनुभवन-
पि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत। कल्पान्तवान्तपयसः प्रक-
टोऽपि यस्मान्मीयेत केन जलधेर्नतु रत्नराशिः?॥४॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव ना-
थजडाशयोऽपि कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य। बालोऽपि किं न निजबा-
हुयुगं वितत्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः?॥५॥ ये योगिनामपि
न यान्ति गुणास्तवेश वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः?। जाता तदेवमसमी-
क्षितकारितेयं जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिन्त्य-
महिमा जिन संस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति। तीव्रातपोपहतपा-

रवाऽपविद्धं त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्रभिन्नग-
जशोणितवारिवाहवेगावतारतरणातुरयोधभीमे। युद्धे जयं विजितदु-
र्जयजेयपक्षास्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥३९॥ अम्भोनिधौ क्षु-
भितभीषणनक्रचक्रपाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ। रङ्गत्तरङ्गशिखर-
स्थितयानपात्रास्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥४०॥ उद्भूतभीषण-
जलोदरभारभुग्नाः शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः। त्वत्पादपङ्क-
रजोऽमृतदिग्धदेहा मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥ आपादक-
ण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः। त्वन्नाम-
मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥४२॥ मत्तद्वि-

पेन्द्रमृगराजदवानलाहिसंग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम्। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥४३॥स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः॥४४॥ ॥

(८) अष्टमं कल्याणमन्दिरस्मरणम्॥ कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्। संसारसागरनिमज्ज दशेषजन्तुपोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्। तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥२॥युग्मम्॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्व-

ऽपि॥३३॥ श्च्योतन्मदाविल विलोलकपोलमूलमत्त भ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥३४॥ भिन्नेभ-
कुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त मुक्ताफलप्रकर भूषित भूमिभागः। बद्धक्रमः क्र-
मगतं हरिणाधिपोऽपि नाक्रामति क्रमयुगाचल संश्रितं ते॥३५॥ कल्पान्तकाल-
पवनोद्धतवह्निकल्पं दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्। विश्वं जिघत्सु-
मिव सम्मुखमापतन्तं त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्॥३६॥ रक्तेक्षणं स-
मदकोकिलकण्ठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्। आक्रामति क्रमयु-
गेन निरस्तशङ्कस्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥३७॥ वल्गत्तुरङ्गगजग-
र्जितभीमनादमाजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्। उद्यद्दिवाकरमयूखशि।

बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्य-
च्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥ छ-
त्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्तमुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्
॥३१॥ उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ति पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरा-
मौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति
॥३२॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य
। यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनो

ति यथा महत्त्वं नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि॥२०॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवता? भुवि येन नान्यः कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम्॥२२॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्। योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः॥२४॥ बुद्धस्त्व-

मेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात् त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात्। धाता-
ऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद् व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि॥
२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणा
य। तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय॥
२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मु-
नीश। दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो-
ऽसि॥२७॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्। स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति॥
२८॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।

प्रकटीकरोषि। गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां दीपोऽपरस्त्वमसि
नाथ जगत्प्रकाशः॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः स्पष्टीकरो-
षि सहसा युगपज्जगन्ति। नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशा-
यिमहिमाऽसि मुनीन्द्र लोके॥१७॥ नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं ग-
म्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्। विभ्राजते तवमुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम्॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि
विवस्वता वा युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ। निष्पन्नशालिवनशालिनि
जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि वि-
भाति कृतावकाशं नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेजः स्फुरन्मणिषु या-

परमाणुभिस्त्वं निर्मापित स्त्रिभुवनैकललामभूत। तावन्त एव खलु ते-
ऽप्यणवः पृथिव्यां यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति॥१२॥ वक्त्रं क्व ते सु-
रनरोरगनेत्रहारि निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम्?। बिम्बं कलङ्क-
मलिनं क्व निशाकरस्य? यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम्॥१३॥स-
म्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्
?॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मनागपि मनो न विका-
रमार्गम्?। कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन किं मन्दराद्रिशिखरं चलि-
तं कदाचित्?॥१५॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं

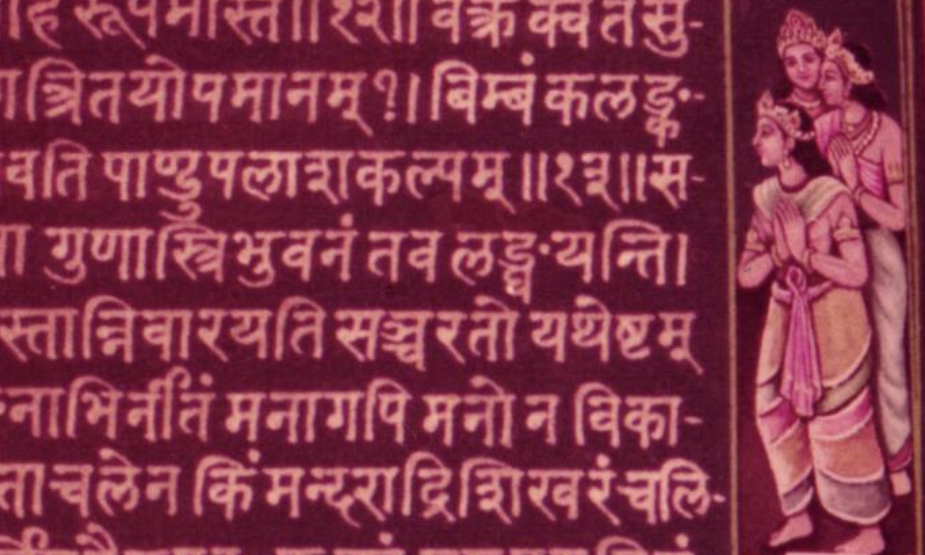

संस्थितमिन्दुबिम्बमन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ?॥३॥ वक्तुं गु-
णान् गुणसमुद्र शशाङ्ककान्तान् कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या
?। कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजा-
भ्याम् ?॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश कर्तुं स्तवं विगतश-
क्तिरपि प्रवृत्तः। प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं नाभ्येति किं निज-
शिशोः परिपालनार्थम् ?॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम त्वद्भक्ति-
रेव मुखरीकुरुते बलान्माम्। यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति त-
च्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः॥६॥ त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्। आक्रान्तलोकमलिनीलमशेष-

माशु सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्॥७॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं
मयेदमारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात्। चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-
दलेषु मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तस-
मस्तदोषं त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति। दूरे सहस्रकिरणः कुरुते
प्रभैव पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन भूषणभू-
त नाथ भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन
किं वा? भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलो-
कनीयं नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्ध-
सिन्धोः क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत्?॥११॥ यैः शान्तरागरुचिभिः

रणो एसो॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ उभओकालंपि अजिअसंतिथ-
यं। न हु हुंति तस्स रोगा पुव्वुप्पन्ना वि नासंति॥३९॥ जइ इच्छह परमपयं
अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे। ता तेलुक्कुद्धरणे जिणवयणे आयरं कुण-
ह॥४०॥ ॥(७) सप्तमं भक्तामरस्मरणम्॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्र-
भाणामुद्योतकं दलितपापतमोवितानम्। सम्यक्प्रणम्य जिणपादयुगं
युगादावालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥१॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्म-
यतत्त्वबोधादुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः। स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरै-
रुदारैः स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥२॥ बुद्ध्या विनाऽपि विबु-
धार्चितपादपीठ स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्। बालं विहाय जल-

अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा॥३३॥ वाणवासिआ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया सव्वलोअहिअमूलपावया। संथुआ अजिअसंतिपायया दुंतु मे सिवसुहाणदायया॥३४॥ अपरांतिका॥ त्रिभिर्विशेषकम्॥ एवं तवबलविउलं थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं। ववगयकम्मरयमलं गइं गयं सासयं विउलं॥३५॥ गाहा॥ तं बहुगुणप्पसायं मुक्खसुहेण परमेण अविसायं। नासेउ मे विसायं कुणउ अपरिसाऽविअ पसायं॥३६॥ गाहा॥ तं मोएउ अनंदिं पावेउ अनंदिसेणमभिनंदिं। परिसाऽविअ सुहनंदिं मम य दिसउ संजमे नंदिं॥३७॥ गाहा॥ पक्खिअचाउम्मासिअसंवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्गनिवा-

हिं॥२६॥ दीवयं। पीणनिरंतर थणभर विणमिय गायलआहिं मणिकं-
चणप सिढिलमेहल सोहिअसोणितडाहिं। वरखिंखिणिनेउरसतिलय-
वलयविभूसणिआहिं रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं॥२७॥ चि-
त्तक्खरा॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा
अप्पणो निडालएहिँ मंडणोड्डुणप्पगारएहिँ केहिं केहिं वीअवंगतिलयपत्त-
लेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते
वंदिआ पुणो पुणो॥२८॥ नारायओ॥ तमहं जिणचंदं अजिअं जिअमोहं। धु-
असव्वकिलेसं पयओ पणमामि॥२९॥ नंदिअयं॥ थुअवंदिअयस्सा रिसि-
गण देवगणेहिं तो देववहुहिं पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तमसासण-

अस्सा भत्तिवसागय पिंडिअयाहिं। देव वरच्छरसावहुआहिं सुरवररइगु-
णपंडिअयाहिं॥३०॥ भासुरयं॥ वंससद्दतंतिताल मेलिए तिउक्खराभिरा-
मसद्दमीसए कए अ सुइसमाणणे अ सुद्धसज्ज गीअपायजालघंटिआ-
हिं। वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कएअ देवनट्टिआहिं हा-
वभावविब्भमप्पगारएहिं। नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुवि-
क्कमा कमा तयं तिलोअसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमा-
मि संतिमुत्तमं जिणं॥३१॥ नारायओ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ झ-
यवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ स-
त्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया॥३२॥ ललिअयं॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा

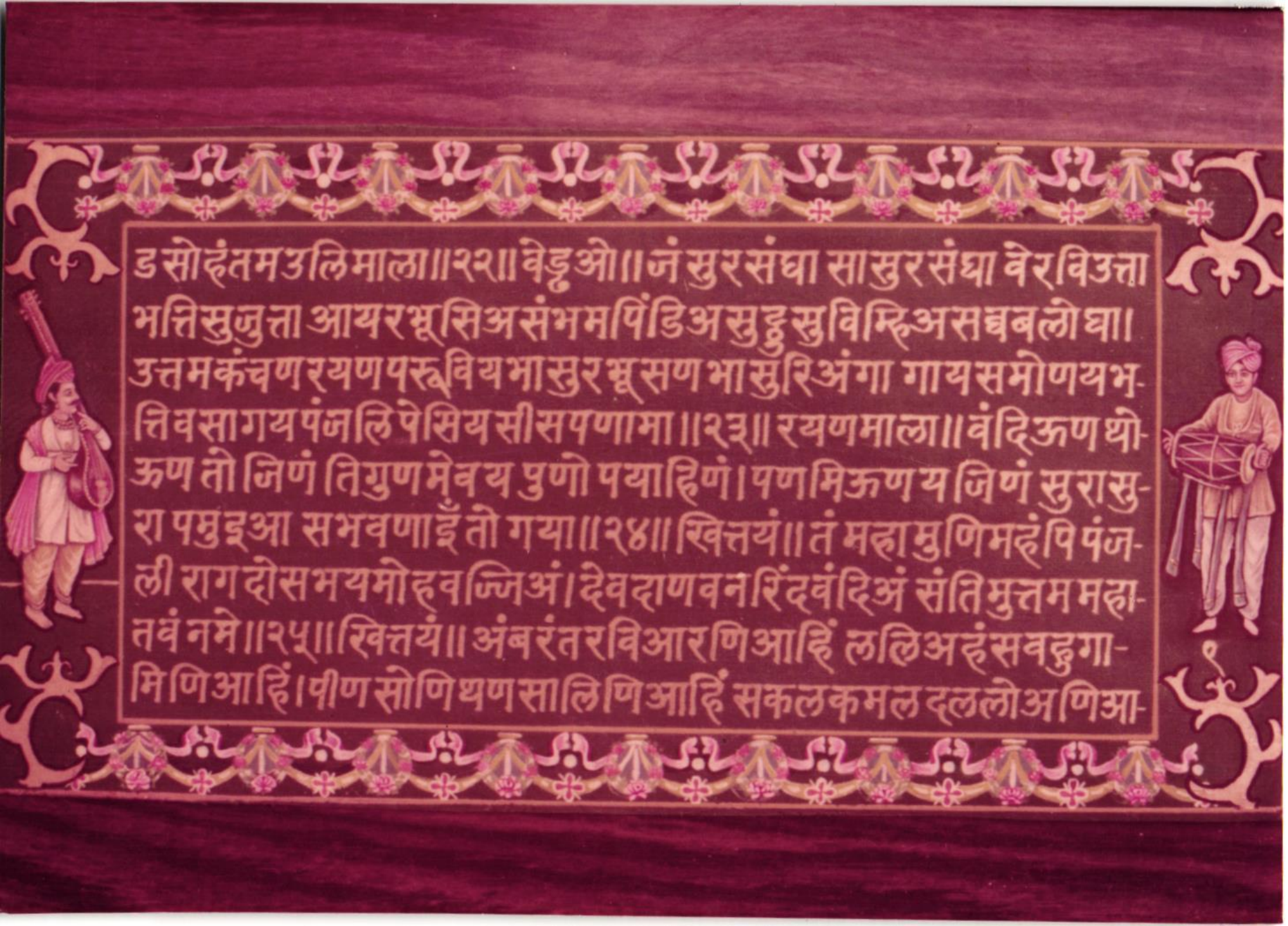

डसोहंतमउलिमाला॥२२॥वेड्ढओ॥जंसुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता
भत्तिसुजुत्ता आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठसुविम्हिअसव्वबलोघा।
उत्तमकंचणरयणपरूवियभासुरभूसणभासुरिअंगा गायसमोणयभ-
त्तिवसागयपंजलिपेसियसीसपणामा॥२३॥रयणमाला॥वंदिऊणथो-
ऊणतोजिणं तिगुणमेवय पुणो पयाहिणं। पणमिऊणय जिणं सुरासु-
रा पमुइआ सभवणाइँ तो गया॥२४॥खित्तयं॥तं महामुणिमहं पि पंज-
ली रागदोसभयमोहवज्जिअं। देवदाणवनरिंदवंदिअं संतिमुत्तममहा-
तवं नमे॥२५॥खित्तयं॥अंबरंतरविआरणिआहिं ललिअहंसवद्धुगा-
मिणिआहिं। पीणसोणिथणसालिणिआहिं सकलकमलदललोअणिआ-

सं। संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे॥
१८॥ ललिअयं॥ विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं वि-
बुहाहिव-धणवइ-नरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो। अइरुग्गयसरय-
दिवायरसमहिअसप्पभं तवसा गयणंगणवियरणसमुइअचारणवं-
दिअं सिरसा॥१९॥ किसलयमाला॥ असुर-गरुलपरिवंदिअं किन्नरो-
रगणमंसिअं। देवकोडिसयसंथुअं समणसंघपरिवंदिअं॥२०॥ सुमुहं॥
अभयं अणहं अरयं अरुयं। अजिअं अजिअं पयओ पणमे॥२१॥ विज्जु-
विलसिअं॥ त्रिभि र्विशेषकम्॥ आगयावरविमाणदिव्वकणगरहतुरयप-
हकरसएहिं हुलिअं। ससंभमो अरणखुभिअलुलिअचलकुंडलं गयतिरी-

रनिगमजणवयवई बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो। चउदसवर-
रयण-नवमहानिहि-चउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई चुलसी-
हय-गय-रह-सयसहस्ससामी छण्णवइगामकोडिसामी आसी जो
भारहम्मि भयवं॥११॥ वेड्ढओ॥ तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्वभया। संतिं
थुणामि जिणं संतिं विहेउ मे॥१२॥ रासानंदियं॥ युग्मं। इक्खाग विदेह-
नरीसर नरवसहा मुणिवसहा नवसारयससिसकलाणण विगयतमा
विहुअरया अजिउत्तम तेअगुणेहिँ महामुणिअमिअबला विउलकु ला
पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं॥१३॥ चित्तलेहा॥ देव
दाणविंदचंद सूरवंद हट्ठतुट्ठ जिट्ठपरम लट्ठरूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध-

र निगम जणवयवई बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो। चउदसवर-
रयण-नवमहानिहि-चउसट्ठिसहस्स पवरजुवईण सुंदरवई चुलसी-
हय-गय-रह-सयसहस्ससामी छण्णवइगामकोडिसामी आसी जो
भारहम्मि भयवं॥२१॥ वेड्डओ॥ तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्वभया। संतिं
थुणामि जिणं संतिं विहेउ मे॥२२॥ रासानंदियं॥ युग्मं। इक्खाग विदेह-
नरीसर नरवसहा मुणिवसहा नवसारयससिसकलाणण विगयतमा
विहुअरया अजिउत्तम तेअगुणेहिं महामुणिअमिअबला विउलकुला
पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं॥२३॥ चित्तलेहा॥ देव
दाणविंदचंदसूरवंद हट्ठतुट्ठ जिट्ठपरम लट्ठरूव धंतरुप्पपट्टसेअसुद्ध-

8

मुत्तिसमाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं संतिमुणी मम
संतिसमाहिवरं दिसउ॥८॥सोवाणयं॥सावत्थिपुव्वपत्थिवंच वरहत्थिम-
त्थयपसत्थविच्छिन्नसंथिअं थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवर-
गंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिहं। हत्थिहत्थबाहुधंत कणगरुअग-
निरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं सुइसुहमणाभिराम-
परमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं॥९॥वेड्ढओ॥अजि-
अं जिआरिगणं जिअसव्वभयं भवोहरिउं। पणमामि अहं पयओ पावं प-
समेउ मे भयवं॥१०॥रासालुद्धओ॥कुरुजणवयहत्थिणाउर नरीसरो प-
ढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो जो बावत्तरि पुरवरसहस्सवरनग-

ति कित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमु-
क्खयरं अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं। अजिअस्स य
संति महामुणिणोऽविअ संतिकरं सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंस-
णयं ॥५॥ आलिंगणयं ॥ दुरिसा जइ दुक्खवारणं जइअ विमग्गह सु-
क्खकारणं। अजिअं संतिं च भावओ अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ मा-
गहिआ ॥ अरइ-रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं सुर असुर ग-
रुल भुयगवइ पययपणिवइअं। अजिअ महमविअ सुनयनय निउण-
मभयकरं सरण मुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं सययमुवणमे ॥७॥
संगययं ॥ तंच जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं अज्जव महव खंति वि-

डा जसं धवलं। पावंति पावपसमिण पासजिण तुह्यप्पभावेण॥२७॥ यु-
ग्मं। रोगजलजलण विसहरचोरारिमइंदगयरणभयाइं। पासजिणना-
मसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं॥२८॥ एवं महाभयहरं पास जिणिंद-
स्स संथवमुआरं। भवियजणाणंदयरं कल्लाणपरंपरनिहाणं॥२९॥
रायभय जक्खरक्खस कुसुमिण दुसुमिण रिक्खपीडासु। संझासु
दोसु पंथे उवसग्गे तह्य रयणीसु॥२०॥ जो पढइ जो अ निसुणइ-
ताणं कइणो य माणतुंगस्स। पासो पावं पसमेउ सयलभुवणच्चिअ-
च्चलणो॥२१॥ उवसग्गंते कमठासुरम्मि झाणाओ जो न संचलिओ। सु-
रनरकिन्नरजुवईहिं संथुओ जयउ पासजिणो॥२२॥ एअस्स मज्झ-

6

यारे अट्ठारस अक्खरेहिं जो मंतो। जो जाणइ सो झायइ परमपयत्थं
फुडं पासं॥२३॥ पासह समरण जो कुणइ संतुट्ठे हियएण। अट्ठुत्तरस-
य वाहिभय नासइ तस्स दुरेण॥२४॥ ॥(६) षष्ठं अजितशांतिस्मरण-
म्॥ अजिअं जिअसव्वभयं संतिंच पसंतसव्वगयपावं। जयगुरु संति-
गुणकरे दोऽवि जिणवरे पणिवयामि॥१॥ गाहा। ववगयमंगुलभावे ते
हं विउलतव निम्मलसहावे। निरुवममहप्पभावे थोसामि सुद्दिट्ठसब्भा
वे॥२॥ गाहा। सव्वदुक्खप्पसंतीणं सव्वपावप्पसंतीणं। सया अजियसं-
तीणं णमो अजिअसंतीणं॥३॥ सिलोगो॥ अजियजिण सुहप्पवत्तणं
तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं। तहय धिइमइप्पवत्तणं तवय जिणुत्तम सं-

विहवसारा तुह नाह पणाममत्तवावारा। ववगयविग्घा सिग्घं पत्ता हियइच्छि-
यं गणं॥२१॥ युग्मं। पज्जलिआनलनयणं दूरवियारियमुहं महाकायं। नह-
कुलिसघायविअलिअगइंदकुंभत्थलाभोअं॥२२॥ पणयससंभमपत्थिवन-
हमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स। तुह वयणपहरणधरा सीहं कुद्धंपि न ग-
णंति॥२३॥ युग्मं। ससिधवलदंतमुसलदीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं। महुपिं-
गनयणजुअलं ससलिलनवजलहरारावं॥२४॥ भीमं महागइंदं अच्चासन्नं-
पि ते नवि गणंति। जे तुम्ह चलणजुअलं मुणिवइ तुंगं समल्लीणा॥२५॥ युग्मं
। समरम्मि तिक्खखग्गाभिग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे। कुंतविणिभिन्नकरि-
कलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि॥२६॥ निज्जियदप्पुद्धुररिउनरिंदनिवहा भ-

५

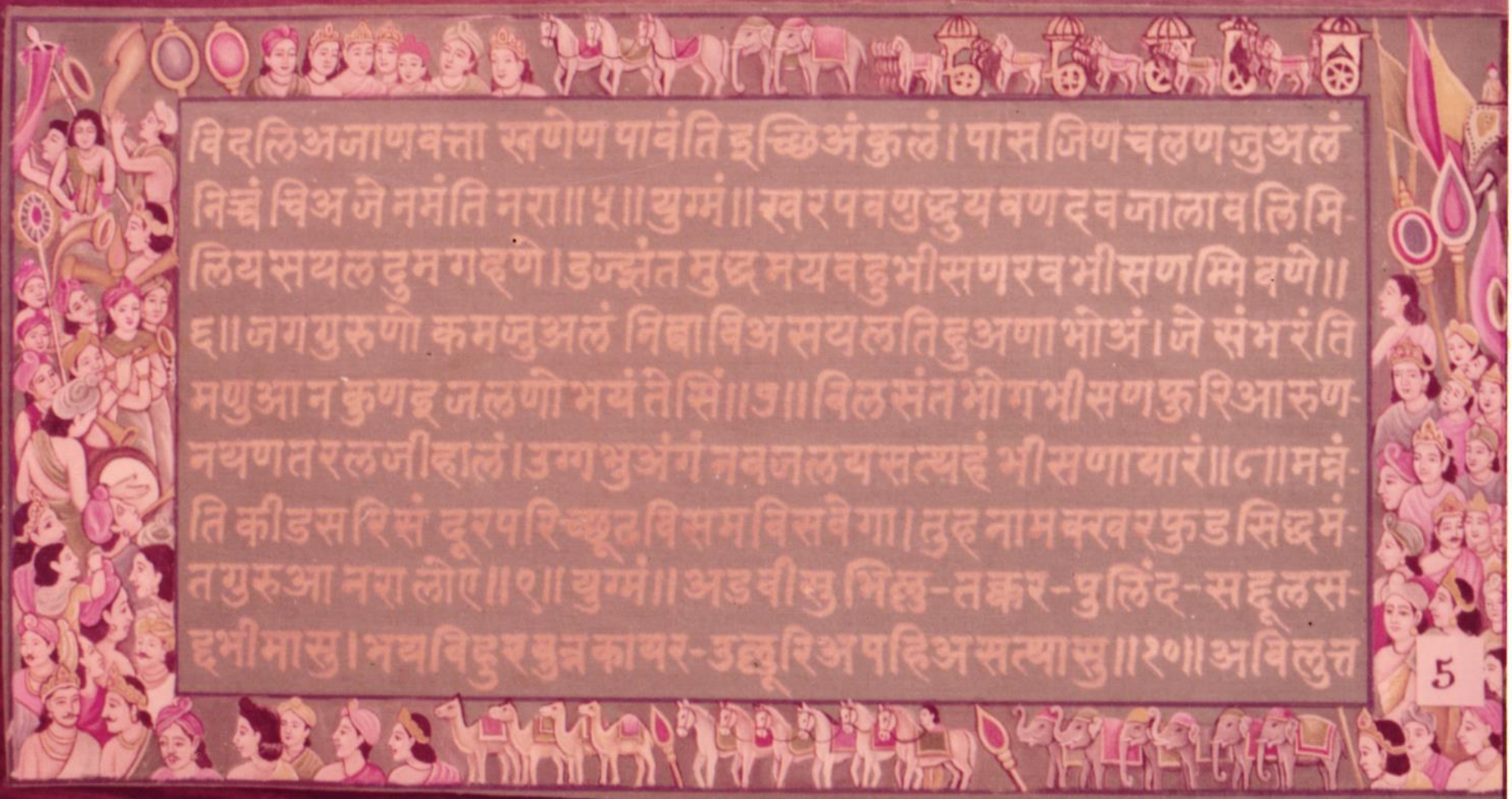

विदलिअजाणवत्ता खणेण पावंति इच्छिअं कुलं। पासजिणचलणजुअलं
निच्चं चिअ जे नमंति नरा॥५॥ जुग्मं॥ खरपवणुद्धुय वण दव जालावलि मि-
लियसयल दुम गहणे। डज्झंत मुद्ध मय वहु भीसणरव भीसणम्मि वणे॥
६॥ जगगुरुणो कमजुअलं निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं। जे संभरंति
मणुआ न कुणइ जलणो भयं तेसिं॥७॥ विलसंत भोग भीसण फुरिआरुण-
नयण तरल जीहालं। उग्ग भुअंगं नवजलय सत्थहं भीसणायारं॥८॥ मन्नं-
ति कीडसरिसं दूरपरिच्छूढ विसम विस वेगा। तुह नामक्खर फुड सिद्ध मं-
त गुरुआ नरा लोए॥९॥ जुग्मं॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंद-सद्दूल स-
द्दभीमासु। भयविहुर वुन्न कायर-उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु॥१०॥ अविलुत्त
5

णि पन्नत्ति वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ। चक्केसरि नरदत्ता
कालि महकालि तह गोरी ॥७॥ गंधारी महजाला माणवि वइरुट्ट त-
ह य अच्छुत्ता। माणसि महमाणसिआ विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥ पं-
चदस कम्म भूमिसु उप्पन्नं सत्तरिं जिणाण सयं। विविहरयणाइवन्नो-
वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥ चउतीस अइसयजुआ अट्ठमहापाडिहे-
र कयसोहा। तित्थयरा गयमोहा झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥ ॐ वरकणय-
संखविद्दुम मरगयघणसन्निहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं सव्वा-
मरपूइअं वंदे ॥११॥ स्वाहा ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर जोइसवासी विमा-
णवासीअ। जे केवि दुट्ठदेवा ते सव्वे उवसमंतु मम ॥१२॥ स्वाहा ॥ चंदण-

कप्पूरेणं फलए लिहिऊण खालिअं पीअं। एगंतराइगहभूअसाइणि-
मुग्गं पणासेइ॥२३॥ इअ सत्तरिसयजंतं सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहि-
अं। दुरिआरिविजयवंतं निब्भंतं निच्चमच्चेह॥२४॥ ॥(५) पंचमं नमिऊ-
ण स्मरणम्॥ नमिऊण पणयसुरगणचूडामणिकिरणरंजिअं मुणिणो
।चलणजुअलं महाभयपणासणं संथवं वुच्छं॥१॥ सडियकरचरणनह-
मुह निबुड्डनासा विवन्नलायन्ना। कुट्ठमहारोगानलफुलिंगनिद्दड्ढसव्वं-
गा॥२॥ ते तुह चलणाराहणसलिलंजलिसेयवुड्ढिउच्छाहा। वणदवदड्ढा
गिरिपा-यवव्व पत्ता पुणो लच्छिं॥३॥ युग्मं। दुव्वायखुभियजलनिहिउब्भ-
डकल्लोल भीसणारावे। संभंतभयविसंठुलनिज्जामयमुक्कवावारे॥४॥अ-

४

पहुत्त पयासय-अट्ठमहापाडिहेर जुत्ताणं। समयक्खित्तठिआणं स-
रेमि चक्कं जिणंदाणं ॥१॥ पणवीसा य असीआ पन्नरस पन्नास जिण-
वरसमूहो। नासेउ सयलदुरिअं भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥२॥ वीसा
पणयाला वि य तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा। गहभूअरक्खसाइणि-
घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥ सत्तरि पणतीसा वि य सट्ठी पंचेव जिणग-
णो एसो। वाहिजल जलणहरिकरि-चोरारि महाभयं हरउ ॥४॥ प-
णपन्ना य दसेव य पन्नट्ठी तहय चेव चालीसा। रक्खंतु मे सरीरं देवा-
सुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः हरहुंहः तहय चेव
सरसुंसः। आलिहिय नाम गब्भं चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥६॥ ॐ रोहि-

बर वरुणो भिउडी गोमेहो पास मायंगो ॥८॥ देवीओ चक्केसरि अजि-
आ दुरिआरि कालि महकाली। अच्चुअ संता जाला सुतारयाऽसोअ
सिरिवच्छा ॥९॥ चंडा विजयंकुसि पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी।
वइरुट्टऽछुत्त गंधारि अंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥ इअ तित्थरक्खण र-
या अन्नेऽवि सुरासुरी य चउहावि। वंतर जोइणि पमुहा कुणंतु रक्खं
सया अम्हं ॥११॥ एवं सुदिट्ठि सुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचं-
दो। मज्झऽवि करेउ रक्खं मुणिसुंदरसूरिथुअ महिमा ॥१२॥ इअ सं-
तिनाह सम्म-द्दिट्ठी रक्खं सरइ तिकालं जो। सव्वोवद्दवरहिओ स लह-
इ सुह संपयं परमं ॥१३॥ ॥(४) चतुर्थं तिजयपहुत्त स्मरणम् ॥ तिजय

3

निन्नासं मंगलकल्लाण आवासं॥१॥ विसहर फुलिंगमतं कंठे धारे-
इ जो सया मणुओ। तस्स गह रोगमारी दुट्ठ जरा जंति उवसामं॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणामोऽवि बहुफलो होइ। नरतिरिएसुऽवि
जीवा पावंति न दुक्खदोगच्चं॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि कप्प-
पायवऽब्भहिए। पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं॥४॥ इअ सं-
थुओ महायस भत्तिभर निब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज बोहिं भवे
भवे पासजिणचंद॥५॥ ॥(३) तृतीयं शान्तिकर स्मरणम्॥ संतिकरं
संतिजिणं जगसरणं जयसिरीइ दायारं। समरामि भत्तपालगनिव्वा-
णी गरुडकयसेवं॥१॥ ॐ सनमो विप्पोसहिपत्ताणं संतिसामिपायाणं।

झ्रौँ स्वाहा मंतेणं सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥२॥ ॐ संति नमुक्कारो खे-
लोसहिमाइलद्धिपत्ताणं। सौँ ह्रीँ (स) नमो सव्वोसहिपत्ताणं च देइ सिरिं
॥३॥ वाणी तिहुअणसामिणि सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा। गहदि-
सिपाल सुरिंदा सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥ रक्खंतु ममं रोहिणि प-
न्नत्ती वज्जसिंखला य सया। वज्जंकुसि चक्केसरि नरदत्ता काली मह-
काली ॥५॥ गोरी तह गंधारी महजाला माणवी अ वइरुट्टा। अच्छुत्ता मा-
णसिआ महमाणसियाउ देवीओ ॥६॥ जक्खा गोमुह मह जक्ख तिमु-
ह जक्खेस तुंबरू कुसुमो। मायंगो विजयाऽजिअ बंभो मणुओ सुर-
कुमारो ॥७॥ छम्मुह पयाल किन्नर गरुलो गंधव्व तह य जक्खिंदो। कू-

२

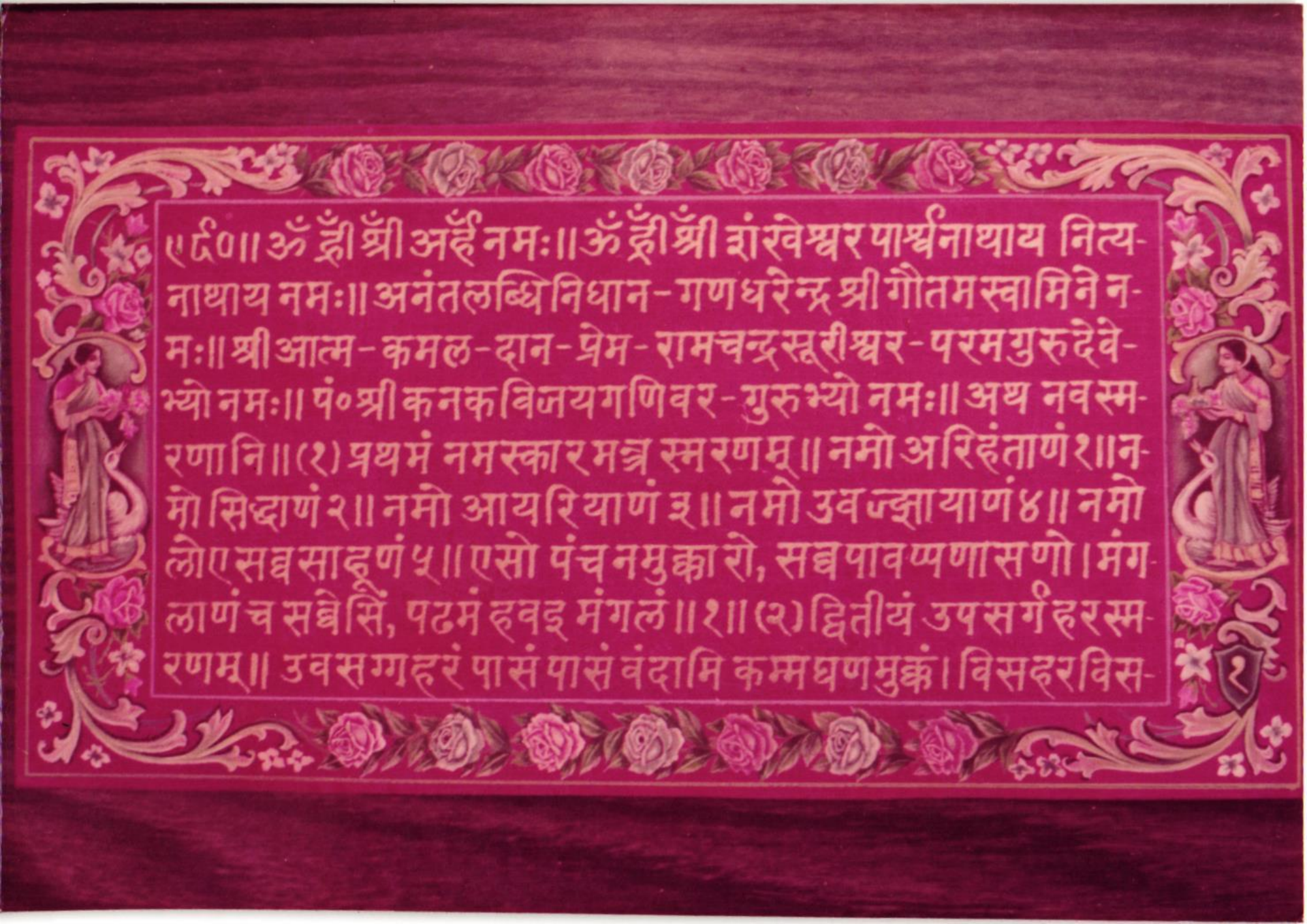

ए६०॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ नमः॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नित्य-
नाथाय नमः॥ अनंतलब्धिनिधान-गणधरेन्द्र श्री गौतमस्वामिने न-
मः॥ श्री आत्म-कमल-दान-प्रेम-रामचन्द्रसूरीश्वर-परमगुरुदेवे-
भ्यो नमः॥ पं० श्री कनकविजयगणिवर-गुरुभ्यो नमः॥ अथ नवस्म-
रणानि॥ (१) प्रथमं नमस्कारमन्त्र स्मरणम्॥ नमो अरिहंताणं १॥ न-
मो सिद्धाणं २॥ नमो आयरियाणं ३॥ नमो उवज्झायाणं ४॥ नमो
लोए सव्वसाहूणं ५॥ एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंग-
लाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥ १॥ (२) द्वितीयं उपसर्गहरस्म-
रणम्॥ उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविस-

अनन्त लब्धी निधान - गण धरेन्द्र - श्री गौतम स्वामि नें नमः ॥ ॥

पूर्व महा पुरुष प्रणीतानी नवस्मरणानि

श्री गौतमस्वामि रासश्च

सचित्रो ऽयं ग्रंथः

- पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय कनकचंद्र सूरीश्वरजी महाराज श्री .
तथा पू. उपाध्यायजी श्री महिमाविजयजी महाराजश्री .